भगवत् कृपा

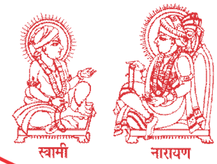

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष-18, अंक-1 सोमवार, 26.1.95	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी जनवरी, 1995	वार्षिक चन्दा-50.00 प्रति अंक : 5.00

छपते- छपते.........

भगवत कृपा छपने के अंतिम सोपान पर थी कि अचानक 21 जनवरी 95 को सुबह 11.25 पर मुंबई से यह अत्यंत दुःखद खबर मिली- गुणातीत समाज के सभी मुक्तों व प्रगट स्वरूपों की चैतन्यजननी ब्रह्मस्वरूपीणी प.पू. सोनाबा ने शरीर छोड़ दिया..... स्थूल रूप से हम सब के बीच में से विदाई ले ली....... गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज व ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी के चरणों में वह तत्व विलीन हो गया...... पर दिव्यस्वरूप से वह तत्त्व- शूरवीरता व अडिग निष्ठा एवं प्रेम का मूर्तस्वरूप हम सब के बीच अखंड विराजमान रहेगा। भगवत्कृपा के अगले अंक में इस बारे सारा वृतांत आप पढ़ पायेंगे।

– सेविका आनंदी के

जय स्वामिनारायण !

3 फरवरी.....................

केवल प्रभु का ही आधार लेने वाले
सच में केवल भजन की तान रखने वाले
गुरुवचन को अध्धर झेलने वाले
अखंड स्वामिसेवक भाव की दृष्टि से जीने वाले
स्वरुप निष्ठा दृढ़ कराने वाले
माहात्मय सम्राट
सर्वदेशियता का पैगाम देने वाले
सरलता का मुर्तस्वरुप
ऐसे-वैसे, ज्यों-त्यों चला लेने वाले
साधुता की पराकाष्ठा लिए
देह को गिने बिना चलने वाले
सहजावस्था में जीने वाले
महाराज की सर्वोपरिता का माहात्म्य बताने वाले
आनंदपूर्ण रसघनमूर्ति
ऐसे हम सभी के प्यारे प्रभु
ब्रहास्वरुप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन
यानि 3 फरवरी ....

3 फरवरी 1952- प.पू. पप्पाजी के शब्दों में विजय दिन, जो गुणातीत समाज के इतिहास में सुवर्ण अक्षरों में लिखा गया ! इस महामंगलकारी दिन गुरुहरी योगीजी महाराज ने अपने लाडले मानसपुत्र को उसकी पराभक्ति से प्रसन्न होकर 72 घंटे की समाधि-साक्षात्कार कराके अपना वारसा दिया..... प.पू. काकाजी के रोम-रोम में 'योगी' स्वंय - पूरे के पूरे आकर बस गऐ ! और इसी दिन गुणातीत समाज के इतिहास में एक नया पन्ना और भी जुड़ा........ भारत की राजधानी दिल्ली में भगवान स्वामिनारायण का मंदिर हो ऐसा गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज का संकल्प था। प.पू. काकाजी ने इस अभिप्राय की भक्ति में रात और दिन देखे बिना अविरत परिश्रम किया..... और 3 फरफरी 1994- प.पू. काकाजी के ही अमृत पर्व में दिल्ली में खुब धुमधाम से अक्षरपुरुषोत्तम व गुणातीत स्वरुपों की मूर्तिप्रतिष्ठा हुई......यूं यह दिन और भी अधिक ऐतिहासिक स्मृति दिन बन गया !

अद्भुत व्यक्तित्व लिए हुए आध्यात्मिक जौहरी व रेशमी कुर्ता पहने प. पू. काकाजी जैसी सुसज्जित विभूति का परिचय कराना- लिखना अत्यंत कठिन है।

जिसके जीवन की पल-पल पराभक्ति का ही परम प्रतीक थी.... संबंध में आए हुए अल्प संबंधी का भला करना- वही जिसने अपने जीवन का परम धर्म- अपने गुरु योगीजी की भक्ति माना था.... जिसकी सैकण्ड-सैकण्ड की प्रत्येक हलन-चलन में भक्तों के प्रति की नितरती करुणा व आत्मीयता की सुगंध महसूस होती थी...... समग्र सत्संग समाज में निर्दोषबुद्धिरूपी भावात्मक एकता व मैत्रीभाव को जिसने अपने खून से सींचा ! ऐसे भगवान स्वामिनारायण और गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुवर्य योगीजी महाराज के पनौते मानसपुत्र एवं चतुर्विध गुणातीत समाज के सृष्टा

व सर्वोत्कृष्ट आत्मीयता के परम आदर्श थे गुरुहरि प. पू. काकाजी.....

गुणातीत पुरूषों को एक ही तान होती है कि निजात्मानं ब्रह्मरूपं.... यानि सब को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने-एकमात्र उद्यम ! उनका व्यक्तित्व ही ऐसा था कि जो कोई जाने-अनजाने उनके संबंध में आए उसे उनकी दिव्यशक्ति का अनुभव हुए बिना रहता नहीं था और पल दो पल की स्मृति भी उसके जीव में चिरंजीव बन जाती। भगवान व ऐसे भगवान धारक संतों के लीलाचरित्र की स्मृति- वही तो जीव के लिये शांति पाने का श्रेष्ठ साधन है न !

प. पू. काकाजी के लिए वैसे कोई निजी, पराया समझदार या बुद्धू ऐसा कुछ था ही नहीं। उनको तो बस एक ही- तुम बापा के संबंध में आए न ! तुम इस गुणातीत समाज में जाने- अनजाने भी आये न ! वह ही तेरा बहुत बड़ा पुण्य-ऐसी महिमा की दृष्टि.......

सूर्य समान प. पू. काकाजी ने मेरा-तेरा, खुद का कुछ भी रखे बिना सब कुछ बापा का ही है ऐसा मानकर सबकी रखवाली करी। अखंड स्वामीसेवक भाव रखकर गुणातीत परम्परा की गरिमा बढ़ाई है। सूर्य की तरह सब को एक जैसा ही प्रकाश दिया। शंका- कुशंका, मत- मतांतर, भेदभाव, मेरा- तेरा और निजी कहलाये गये सेवकों की भी उपेक्षा का कड़वा जहर पीकर बदले में सबको अमृत ही बांटा ! समग्र गुणातीत समाज की हर एक तकलीफों-मुश्किलों को प. पू. काकाजी ने खुद के ही माने। सब को बल मिले उसके लिए एक प्रभु का ही आधार लेकर सहज ही भजन- प्रार्थना खुद करते और कराते। ताड़देव में सारा दिन कथावार्ता, भजन, धून्य का मानो अखंड अखाड़ा चालू रहता.... सामने बैठे पात्र बदलते- सुबह से लेकर रात तक प. पू. काकाजी तो एक के एक ही रहते, पर तब भी प. पू. काकाजी का अत्साह, उमंग, महिमा में कभी भी कमी नहीं आती। उनको भजन की क्या जरूरत थी? पर हम सब के लिए- हमें अक्षरधाम का सुख देने का भजन व संकल्प करते थे वे ! किसी भी मुमुक्ष को उसके रास्ते खूब सरलता से ले जाने अनेक रास्ते, उपाय व फोर्मूले प. पू. काकाजी सतत् देते ही रहे..... देते ही रहे और वह भी हमारी रूचि व स्वभाव के मुताबिक !

वास्तव में देखा जाए तो सभी प्रकट गुणातीत स्वरूपों प. पू.पप्पाजी, प. पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प. पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, पू. साहेब, पू. दिनकरभाई और गुणातीत समाज के अन्य बड़े मुक्तों का माहात्म्य का सिंचन हमारे ह्यदय में पू. काकाजी ने ही डाले और इन योगी स्वरूपों के प्रति की निष्ठा दृढ़ कराई..... जीवन की आखिरी सांस तक गुणातीत स्वरूपों, संतो, मुक्तों के गुणों का दर्शन कराकर दासत्वभाव, सुह्रद्‌भाव, दासभाव, अहोभाव से जीना समझाया और भक्तों की सेवा वह ही प्रभु की पराभक्ति है- इस परम सत्य का साक्षात्कार कराया। उनका समग्र जीवन ही एक शिक्षा थी..... जीवन की आखिरी सांस तक वह परम चेतना संबंध में आए चैतन्यों की परवरिश करती रही और देह छोड़कर भी अब वह अधिक सतर्क है !!

प. पू. काकाजी से जुड़े संतों, बहनों, युवा साधकों व गृहस्थ मुक्तों के जीवन के निम्न प्रसंग- प. पू. काकाजी के अनहद सामर्थ्य, छिपी साधुता की चरम सीमा, स्वामी सेवकभाव की पराकाष्ठा एवं आत्मा के सच्चे पथप्रदर्शन की झांकी कराते हैं...... सच, गुणातीत पुरूषों के साथ की हर एक पल ऐतिहासिक व प्रेरणादायी होती है जिन्हें हमें शाश्वत् कर लेनी है......

✡✡✡✡✡

गुणातीत का गणित

प. पू. काकजी का जीवन देखें तो वह केवल जीवलक्षी ही दिखाई दे। संबंध में आए जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने ही उनका हेतु दिखाई देता था। पू. नंदाजी ने पू. काकाजी को कुरुक्षेत्र की फार्मेसी संभालने दी थी। फार्मेसी बहुत वर्षों से घाटे में चलती थी। जिससे बम्बई से वहां गए मुक्तों ने पत्र

लिखकर बताया-यह फार्मेसी हम चला नहीं पायेंगे। फार्मेसी तो घाटे में चलती है। सो हम जो भी पैसे उसमें डालेंगे वह सब डूबते ही जायेंगे।

पू. काकाजी ने पत्र का जवाब लिखा- **फार्मेसी लाख रूपये का फायदा करे या घाटा करे, उसकी मुझे कोई परवाह नहीं, लेकिन तुम सब एक होकर सुहृदभाव से वर्तते हो जाओ, तुम सब तैयार हो जाओ, तुम मूर्ति में रहकर काम करना सीखो- उसमें सब कुछ आ गया।**

ऐसे ही स्वामी रामतीर्थ शताब्दी के महोत्सव के आयोजन में भी पू. काकाजी जुटे। ट्रेजरार के स्थान पर रहकर शताब्दी का समारोह भी भव्यता से करा। इससे यह प्रसंग से जुड़े श्री पागेजी (महाराष्ट विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष) श्री पोहेकर (इन्डो जापनीस ऐसोसियेशन के मंत्री) और श्रीमती लीलावती मुंशी (साक्षर कन्हैयालाल मुंशी की पत्नी) वगैरे महानुभावों को पू. काकाश्री का खूब गुण आ गया।

प्रखर विद्वान और चिकित्सक श्री पागेजी बहुत बार बोले- **मैंने दादुभाई को बड़ी सभा में गद्दी पर बैठे हुए भी देखा है और एक सामान्य कार्यकर्ता की तरह सेवा करते हुए भी देखा है लेकिन मुझे उनकी मस्ती और उनके आनंद में जरा भी फर्क लगा नहीं। भगवद्‌गीता में जो स्थितप्रज्ञ पुरूष की बात करी है उसका प्रत्यक्ष दर्शन दादुभाई में होता है।** पू. काकाजी कैसे भी प्रसंग में चाहे कभी भी- कहीं भी आने उमंग से तैयार हो जाते। सभी महानुभावों के दिल में पू. काकाजी की प्रभुता की कैसी गहरी छाप पड़ी होगी ?

—पू. राजूभाई भट्ट

✡✡✡✡✡

प्रभु नहीं, प्रभु का लड़का हूँ

प. पू. काकाजी 1983 की साल में अमेरिका आए थे। वे कल्याणयात्रा पूरी करके वापिस भारत जाने वाले थे। इसलिए अगले दिन हमने वहाँ के Fransisco Hall में पू. काकाजी का विदाई समारोह रखा था। विदाई समारोह के पहले दिन मैंने जिस दुकान पर अपना चश्मा बनने दिया था वह लेने गया, पर चश्मा तैयार नहीं हुआ था। आधे घंटे की देरी थी। अमेरिका में Customers Service को वे खूब महत्व देते हैं व खुश रखते हैं। चश्मा तैयार हो रहा था। उसी दरम्यान उसी दुकान की एक बहनजी ने मेरे साथ बातचीत शुरू की कि मैं भी India गई हूँ। मैं Meditation सीखी हूँ। हिमालय में अनेक योगियों को मिली हूँ। मुझे आध्यात्मिक बातों में खूब रस है।

यह बात सुनकर मैंने उन बहनजी को कहा मेरे गुरुजी यहां पधारे हुए हैं वे भी बहुत बड़े योगी हैं। वे वापिस भारत जा रहे हैं, सो कल Fransisco Hall में उनका विदाई समारोह रखा है। आप आओगे तो जरूर लाभ मिलेगा। वे बहनजी बोले कि वह जगह तो मेरी देखी हुई है मैं जरूर आऊँगी।

दूसरे दिन वह बहन अपने एक जिज्ञासु मित्र के साथ हमारे समारोह में आई। मैंने उनको आगे बैठने के लिए कहा लेकिन वे आखिरी पंक्ति में अकेली बैठी। सभा की पूर्णाहूति में पू. काकाजी प्रवचन करते थे। तब वह बहन ने सम्मोहन से पू. काकाजी पर स्वयं का concentration (चित्त एकाग्र) करा। पू. काकाजी को उसकी कुछ असर नहीं हुई। लेकिन जिस माईक पर पू. काकाजी प्रवचन कर रहे थे वहां उसे तेज का गोला दिखाई दिया और पू. काकाजी की जगह पर उसको केवल आवाज ही सुनाई दी ! वह बहन तो यब देखकर आश्चर्य में डूब गई और स्वयं की भूल समझ गई। उसने मनोमन प्रायश्चित रूप प्रार्थना करी। इसलिए उसे पू. काकाजी के दर्शन हुए लेकिन तब उसे पू. काकाजी के सारे शरीर के आसपास एकदम श्वेत तेज का गोला जिसे अंग्रेजी में Aura कहते हैं, उसका दर्शन हुआ।

सभा पूरी होने के बाद वह पू. काकाजी को मिलने आई और निष्कपटभाव से पू. काकाजी को सारी बात करी व माफी माँगी। पू. काकाजी की ओर भाव व्यक्त करते हुए कहा—'You are God, you are Absolute energy' (आप भगवान हो, आप ही परम शक्ति हो)

तब पू. काकाजी बोले—'No I am only a son of God.' (नहीं मैं तो भगवान का केवल लड़का ही हूँ) फिर पू. काकाजी के साथ वार्तालाप में उसने कहा मैं India बहुत बार आई हूँ, हिमालय में मैं कई योगी- महात्माओं को मिली हूँ, लेकिन आप के शरीर के आसपास जो Snow-white thick Aura मैंने देखा वैसा thick Aura किसी योगी महात्मा में देखा नहीं ! और सफेद रंग- वह तो विशुद्ध चेतना हो उसके शरीर में से ही निकल सके, बाकी पीला, भूरा या दूसरा रंग हो सकता है। white Aura तो भाग्य से देखने मिले। भारत में आप जैसे तो भाग्यशाली महान पुरुष शायद ही कोई हो सकता है। पू. काकाजी बोले- नहीं ऐसा नहीं, मेरे से भी विशिष्ट योगी इस धरती पर हैं पर ढूंढने पड़ते हैं।'

यूं पू. काकाजी की बातचीत दौरान कोई भी प्रकार की 'आत्मश्लाघा' बड़प्पन नहीं थी, जिससे वह मनोमन खूब खुश हुई और कहा—'You are really great, you are a God-like person. There is no doubt, you bless me.' यूं कहकर उसने पू. काकाजी को हमारी प्रथा के मुताबिक नीचे झुककर नमन करा। फिर पू. काकाजी को कहा- मुझे साधना करने आपके आश्रम में जाना है। आपकी क्या शर्त होती है ? पू. काकाजी ने कहा—'अभी तुम दो वर्ष Meditation चालू रखो। दो वर्ष बाद हम निर्णय करेंगे।' सो, उसने पू. काकाजी को फिर कहा—You are really great, you can read my thoughts. At present I am in a confused state of mind, You bless me.' (आप सच में बहुत महान हो। आप मेरे मन के विचारों को जानते हो और मैं अभी मानसिक दुविधा में हूँ, आप मुझे आशीर्वाद देना।) यूं कहकर उसने विदाई ली।

यूं बाहर से आयी व्यक्ति की अलौकिक अनुभव वाणी सुनकर हम सब को पू. काकाजी की दिव्यता की खूब दृढ़ता हुई और साथ ही योगीबापा के साथ का अखंड स्वामी-सेवकभाव का भी दर्शन हुआ।

—पू. दिनकरभाई

प.पू. काकाजी कितने समर्थ पुरुष ? लेकिन वे हमेशा छुपे हुए ही वर्ते! बस, स्वामी सेवकभाव की अदा से आखिरी सांस तक जिए वह हमें इन प्रसंगों द्वारा ख्याल पड़ ही जाता है। अब ऐसे प्रसंग निहारें जिससे ख्याल पड़ता है कि प.पू. काकाजी हम से क्या कराना चाहते थे......

✡✡✡✡✡

सुहृद्भाव का साबुन

ताड़देव में पू. काकाजी की छत्रछाया में हम सब साधक भाईयों समूह जीवन जीते थे। समूह में साधना करते हुए हर एक को स्वयं की रीत से पू. काकाजी को राजी करने की इच्छा स्वाभाविक रहे ही। पू. काकाजी की क्या पंसद है क्या नहीं, उसका हम सब अपने-अपने तरीके से मूल्यांकन करते। पू. काकाजी को राजी करने की हर एक भाई की भावना सुंदर, परन्तु सच में तो पू. काकाजी को क्या पंसद है वह तो वे कृपा करके बताएं तो पता चले।

एक बार पू. काकाजी के नहाने के लिए कौन-सा साबुन लाए? उस बारे चर्चा हुई। एक सेवक ने कहा- 'इस बार हम पू. काकाजी के लिए जास्मीन साबुन लाएगें। उसकी सुगंध बहुत अच्छी है और चिकना भी नहीं।' तो दूसरे सेवक ने कहा-'लक्स साबुन ही अच्छा है। शुरू से हम वह ही इस्तेमाल करते हैं और यदि लक्स ना लाना हो तो सीन्थोल साबुन लाएगें लेकिन दूसरा आलतू-फालतू साबुन पू. काकाजी के लिए नहीं लाने।' वहां तो तीसरा सेवक जो कि मंदिर की सारी ही खरीददारी करता और जिसे पू. काकाजी के लिए ऐसी-वैसी वस्तु आए वह पंसद ही नहीं था उसने कहा- इस बार तो मैं पू. काकाजी के लिए Pears साबुन ही लाने वाला हूँ। हम Transperent साबुन तो लाए ही नहीं। वह ग्लीलरीन में से बनता है इसलिए अच्छा है।'

यूं हर एक ने अपनी-अपनी पंसद का साबुन बताया। लेकिन एक साबुन पर भी पंसद ठहरी नहीं। सो सब सेवक पू. काकाजी के पास आए। पू. काकाजी ने देखा कि सभी मिलकर कोई बात करने आए हैं। एक सेवक ने पू. काकाजी को पूछा---काकाजी

आपको कौन सा साबुन जमेगा? लक्स, जास्मीन या पीयर्स? पू. काकाजी सब के सामने देखते रहे। फिर बोले-'**मुझे तो सुहृदभाव का साबुन पंसद है। चाहे वह मिट्टी में से बना हुआ हो तो भी मुझे जँचेगा।**'

प्रसंग कैसा सामान्य? लेकिन सेवकों को सुहृद्भाव वर्ताने और उसका माहात्म्य समझाने पू. काकाजी की कैसी लगन! प.पू. योगीबापा का सूत्र सुहृद्भाव तो जीव का जीवन है उसकी ऐसी अनोखी सूझ पू. काकाजी देते और स्वयं को भी सुहृद्भाव व मैत्रीभाव खूब ही जँचता है, उसका यूं बार-बार दर्शन कराते थे।

–पू. भरतभाई मेहता

✡✡✡✡✡

दुनिया नहीं माने, मानव नहीं माने.......तुम तो मानो

एक दिन प.पू. काकाजी धून करा रहे थे। हम सात-आठ युवक और चार-पाँच हरिभक्तों तथा बहनें बैठी थी। पू. काकाजी की धून यानि- कहना ही क्या? धून जोरदार हुई। बराबर पौने घंटे चली। फिर पू. काकाजी बोले- दो मिनट ध्यान कर लें। सभी आखें बंद करके ध्यान करने लगे। पू. काकाजी हमेशा ध्यान में बोलते-कौन हो तुम? किसके हो? बापा कैसे? गहरा श्वास लो, छाती भरकर मस्तक तक। अब अटको, भावना करो........ हे महाराज ! हे स्वामी ! मेरे इंद्रिय-अतः करण को शुद्ध, पवित्र शक्तिशाली बनाना। मेरे जीव को सत्संगी बनाना। धीरे-धीरे श्वास को बहार निकालो ।नाभि के नीचे 'मूलाधार चक्र' तक......अशुद्धि निकल गई। तीन बार प्राणायाम करा कर पू. काकाजी बोले- **दुनिया नहीं माने, मानव नहीं माने तुम मानते हो?**

पू. काकाजी के ये शब्द मेरे भीतर को टकराए और मन में सहज विचार आया कि यह तो पू. काकाजी हमेशा सबके के लिए कहा करते है। तुरन्त ही पू. काकाजी फिर बोले- '**दुनिया नहीं माने, मानव नहीं माने, तुम जो यहाँ बैठे हो उन्हें कहता कहता हूँ कि तुम मानते हो?**' तब फिर मेरे मन में विचार आया कि-यह बात यहाँ बैठे हुए सब के लिए है। और यह विचार जैसे आया ही कि पू. काकाजी फिर बोले-'**दुनिया नहीं माने, मानव नहीं माने,राजू मैं तूझे पूछता हूँ तू मानता है?**' सुनते ही मेरी आंखे खुल गई। अंतर में उठे पल-पल के संकल्पों से पू. काकाजी बिल्कुल अन्जान नहीं यह पक्का मान गया। भीतर के वार्तालाप से ही पू. काकाजी ने मुझे जाग्रत कर दिया। कैसा उनका अनुग्रह ! दरअसल, हमें ही यह बात माननी है और उसके मुताबिक जीना है- यह बात मेरे मन ने स्वीकार ली। सो पू. काकाजी ने मेरे सामने देख कर कहा- 'राजू यह तेरा सूत्र।' तब से वे कोई सभा में बात करते होते और हम जरा भी गाफिल हो यो यह वाक्य बोल कर जागृत कर देते। 'दुनिया नहीं माने, मानव नहीं माने, राजू तू मानता है? कैसा अनुग्रह!'

-पू. राजूभाई भट्ट

ऐसे अन्य कितने प्रसंग हैं जिनसे ख्याल तो पड़ ही जाता है कि पू. काकाजी ने हम से क्या अपेक्षा रखी थी और अब भी रखते हैं। तो हे काकाजी ! हमारे वर्तन से आपकी स्मृति-आपका परिचय सदा जीवंत रखें। आप हमारी साधना के प्रत्यक्ष पथप्रर्दशक बनकर पूर्णता के रास्ते चला लेना। आपको स्वप्न में भी परोक्ष ना मानें, बल्कि पहले से अधिक आपकी अखंड हाजिरी मानकर प्रत्येक वर्तन करें। आपके द्वारा दिए परम सत्यों को जीवन में प्रगटाकर आपके स्वरूप को पहचानने की शक्ति और सूझ की बक्षिश देना। आपको हुए साक्षात्कार के प्रकाश में स्वयं को रखकर आपकी कृपा से आपके एकमात्र आधार से, आपके बल से अब आत्मा के उत्थान की ओर दौड़ें यही साक्षात्कार दिन की प्रार्थना।

✡✡✡✡✡

चिरंजीव स्मृति-आत्मीय महोत्सव

1966 की वो घड़ी-जब संस्था ने प. पू. काकाजी प. पू. पप्पाजी व संतों को विमुख कर दिया। तब बेशक किसी को ऐसी कोई चिंता तो थी ही नहीं कि क्या होगा? परन्तु एक दुविधा में जरूर थे कि कहीं हम गल्ती तो नहीं खा गये या गुरूहरि योगीजी महाराज के प्रति की कोई वफादारी तो नहीं चूकें रहे ना? और इसी कशमकश के समय पर प. पू. काकाजी ने संतों को एक पत्र में डंके की चोट पर लिखा कि-**'जो कुछ अभी हो रहा है और भविष्य में होगा वह सब कुछ खूब अधिक ध्यान में- गुरुजी(बापा) की गिनती के अनुसार ही होता जा रहा है। आश्चर्यों की ही परम्परा सुनने, देखने व अनुभव करने को मिला करेगी। नया ही चैत्तन्य-स्वरुपों का इतिहास निर्मित हो रहा है। वह भविष्य में गुरुहरि (बापा) सुवर्ण अक्षरों में लिखना चाहते हैं.......'**

और....आज के भव्य 'आत्मीय महोत्सव' का दर्शन जो कि गुणातीत समाज के इतिहास में सुवर्ण अक्षरों से लिखा गया वह अठ्ठाईस साल पहले प. पू काकाजी द्वारा लिखे गए पत्र की सम्यक् झांकी कराता है। करोड़ों धन्यवाद हो उस आर्षदृष्टा विभूति को।

ओहो ! भव्य आयोजन ! दिव्य वातावरण ! संतों, बहनों, युवकों, हरिभक्तों के अत्यधिक उमंग, उत्साह, बेजोड़ गुरुभक्ति, अनुपम सेवाभाव की कहानी अपनी मूक जुबान से ही बोलता हुआ अविस्मरणीय 'आत्मीय महोत्सव....' करोड़ों धन्यवाद सांगोपांग भगवान प्रगटाये दिव्य विभूति प. पू. हरिप्रसादस्वामीजी को व गुरु के लिए दिन-रात गिने बिना, देह को गिने बिना, तन, मन, धन से जुटकर-मर मिटने की अदा से निरंतर गुरु को राजी करने की एकमात्र भावना से मिलजुल कर दौड़ने वाले आत्मीय समाज को.......

28.12.94 से 1.1.95 तक हरिधाम सोखड़ा की तीर्थभूमि पर 'आत्मीय महोत्सव' खूब धूमधाम से सम्पन्न हुआ। 28 दिस.94 को सर्वप्रथम बड़ौदा से हरिधाम तक युवकों की स्कूटर रैली निकली। 29 दिस. की सुबह संतों, युवकों द्वारा अत्यधिक परिश्रम से निर्मित्त 'हरिघाट' पर बने स्टेज revoling पर युवा अधिवेशन का उद्घाटन ध्वज प. पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प. पू. साहेब, पू. दिनकरभाई एवं जैनाचार्य पू. श्री जिनचंद्र विजयजी महाराज ने लहराया। गुरुहरि योगीजी महाराज के हार्दरूप 'युवकों मेरा हृदय है', वाक्य को साकार करने की भावना से दो दिन 'युवा अधिवेशन' था जिसमें सभी सम्प्रदायों के आचार्यों, गुरुजनों और मठाधीशों ने इस मंगल पर्व पर पधार कर वर्तमान काल की परिस्थितियों का सम्यक् दर्शन कराते हुए युवकों को व्यसन मुक्ति, अच्छे संस्कार सिंचन किया, जीवन में संत की अनिवार्यता पर अनुपम मार्गदर्शन दिया। 30 दिस. को सांय 4.00 से 7.00 महिला समाज के उत्कर्ष के लिए आयोजित किए गए महिला सम्मेलन में प.पू. शांताबहन, पू. ज्योतिबहन, पू. प्रेमबहन, अतिथि विशेष पू. अनुबहन ने बहनों को प. पू. स्वामिजी का माहात्म्य, जीवन में प्रत्यक्ष संत की अनिवार्यता पर अनोखी सूझ देकर मार्गदर्शन किया। तीनों दिन रात को हरिभक्तों ने भजन संध्या व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लिया।

31 दिस. की सुबह 21,000 युवकों ने प. पू. स्वामिजी की निश्रा ने इकट्ठे बैठकर समूह में पूजा की और ली।

इसी दिन सुबह की सभा द्वारा युवा अधिवेशन की पूर्णाहुति करी गई। जिसमें प. पू. साहेब ने युवकों का मार्गदर्शन करते हुए बात करी-**'भगवान व साधु के साथ रहना खूब कठिन है। आत्मा के विकास के लिए साधु दौड़ रहा है....जो स्वयं सच्ची राह पर होगा वही सच्ची राह पर दूसरों को चला पायेगा। बापा ने युवकों के लिए प्रेम का ही शस्त्र लिया है। आत्मा के लिए पूजा की नित्य जरुरत है। भजन-प्रार्थना में श्रद्धा व विश्वास**

रखना। साधु उसे कहा जाता है जो अपने गुरु के वचन में याहोम हो जाए। प्रसन्नता पाने के लिए खत्म हो जाए। सेवा प्रसन्नता का साधन है। सेवा से जवानी के व्यसन छूट जायेंगे।'

युवा अधिवेशन की पूर्णाहुति में प. पू. स्वामिजी ने भी बात करी-**मानवजीवन में जितनी आक्सीजन की जरूरत है उससे अधिक संत की जरूरत है। हमारी जात का-स्वसौरभ का प्रदर्शन करने का भयंकर रोग-मैं समझता हूँ मैं बुद्धिशाली हूँ, मैं सौन्दर्यवान हूँ वगैरा........भयंकर रोग हैं। कोटि कल्प से जीव मनधारा ही करता आया है। भगवान स्वामिनारायण ने खूब सरल मार्ग रखा है-संतमार्ग। संघर्ष तो आयेगा ही, प्रसंग बनेंगे ही.....अह्म टकरायेगा.... प्रकृति-प्रकृति के साथ टकरायेगी ही- पर बस भजन करना।'**

दोपहर 4.00 से 7.00 आत्मीय महोत्सव की पहली सभा हुई जिसमें प. पू. दिनकरभाई ने प्रार्थना करी-**'आज के पवित्र दिन पर हम भुल्काओं की प्रार्थना... हमें भजन करने का बल मिले। जैसे आप सब गुणातीत स्वरूपों ने बापा को राजी किया वैसा हे गुणातीत स्वरूपों ! हम सब आप को राजी कर लें। आपके संबंध को संभाले-जैसे छोटा बच्चा मम्मी-मम्मी करे तो मम्मी कहीं से भी आ जाती है। देहभाव से अलग होकर ब्रह्मभाव में रहते हो जाए ! 24 घंटे आपकी स्मृति में रहे।'**

प. पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने बात करी-**'हमारे में परिवर्तन-वही स्वामिजी का असली माहात्म्य है-आत्मीय महोत्सव है। अपनी उमंग अखंडित रहे- हमेशा नये वर्ष के दिन जैसी उमंग, उल्लास, हर्ष रहे....'**

प. पू. पप्पाजी ने आर्शीवादरूप परावाणी बरसाई-**'आज योगीजी महाराज, पू. काकाजी महाराज व पू. कांतिकाका खूब राजी होते होंगे.....एक आत्मीय समाज-महामानव का समाज तैयार करने पू. स्वामिजी लगे हैं.... जैसे आत्मीय समाज का सर्जन करना आप चाह रहे हैं। 99 प्रतिशत काम तो गुणातीत स्वरूप का संकल्प ही करता है। माहात्म्य सभर जीवन सब का बने। निरंतर अक्षरधाम की समाधि के सुख में सब रहते हो जाए।'**

प.पू. स्वामिजी ने आत्मीय महोत्सव के उद्‌घाटन में प्रवचन किया-**'काकाजी, पप्पाजी ने ताड़देव की धरती से आत्मीयता का संदेश फैलाया....योगी शताब्दी पर मुझे आत्मीयता का दर्शन नहीं हुआ। तब मैंने कहा था-सब खुले दिल से एक दूसरे के नजदीक आओ संबंध स्वीकारो और तब आत्मीय महोत्सव मनाओ.....'**

1 जनवरी 95 यानि आत्मीय महोत्सव की पूर्णाहुति का दिन......प. पू. पप्पाजी, प. पू. स्वामिजी फूलों से श्रृगांर करे हुए रथ में बैठकर सभा मंडप में पधारे-सारा वातवरण दिव्यता की सुवास से महक उठा था। यह मुख्य आकर्षण का दिन था क्योंकि इस दिन प.पू. स्वामिजी की तालियों की गड़गड़ाहट, नारों की गूंज के बीच सुवर्ण तुला करी गई जिसका अरसे से भक्तों को इंतजार था और जो हर एक के लिए चिरंजीव स्मृति बन गई ! प. पू. स्वामिजी की सुर्वण तुला के बाद आत्मीय महोत्सव पूर्णाहूति की सभा हुई जिसमें पू. प्रेमस्वामी, पू. दासस्वामी, प. भ. फकीरभाई इत्यादि संतों-हरिभक्तों ने आत्मीय महोत्सव निमित्त अपने दिल के उद्‌गार कहे कि प. पू. स्वामिजी आज सुवर्ण से नहीं बल्कि लाखों भक्तों के दिल से तोले गए हैं.......

प. पू. पप्पाजी ने आशीर्वाद बरसाते हुए कहा कि-**'सचमुच पू.स्वामिजी ने अत्यधिक परिश्रम करके 25-30 साल में खूब काम किया। बापा का खूब शोभाया......पू. स्वामिजी की सुवर्ण तुला नहीं हुई बल्कि इतने अधिक दिलों से तोले गए...आज एक आत्मीय समाज दिखाई पड़ रहा है.... गुणातीत पुरूषों राजी होंवे तो अपना भाग्य पलट जाता है। अमृतपर्व व हीरक महोत्सव नहीं मना रहे-आज योगीजी महाराज का सपना साकार कर रहे हैं।'**

महोत्सव की पूर्णाहुति करते हुए प. पू. स्वामिजी ने बात करी- **'हमारी यात्रा तो साधु की उगंली पकड़कर चलने की है.....आत्मीयता तब साकार होती है, जब तुम हर पल प्रभु को ही कर्ताहर्ता मानो ! कर्ताहर्ता**

मानकर निष्ठा से चलो-यह अपनी यात्रा है।' काकाजी, पप्पाजी 1952 से ऐसा जी रहे हैं। ताड़देव को आत्मीयता का केन्द्र बनाया.....हम आज उसका फल खा रहे हैं.......साधक को अपना कुछ भी प्यारा हो वो भगवान के संत के चरणों में रखना चाहिए। मैं कुछ हूँ.......इसी कॉन्सीयसनेस में सब जी रहे हैं। कर्ताहर्ता-मेरी आंख में देखने वाला, जीभ से बोलने वाला केवल प्रभु है। कोई आत्मीय बने या ना बने...... हे प्रभु मुझे बनाना। स्वाध्याय जरूर करना। अपने आपको भाग्यशाली खूब मानना कि ऐसे गुणातीत समाज में रहना मिला। आत्मीयता प्रभु की ओर जाने की अंतिम यात्रा है.....निष्ठा पकड़ रखना।

इस तरह आत्मीय महोत्सव की पूर्णाहूति हुई और अंत सें सभी ने आत्मीय महोत्सव की जय जयकार करके अपनी उमंग-उत्साह का दर्शन कराया। यह पांच दिन के प्रसंग में आए हुए प. पू. कृष्णशंकर शास्त्रीजी, प. पू. नृत्यगोपालदसस्वामिजी, प. पू. अवैधनाथजी महाराज, प. पू. हरिनारायणनंदाजी, प. पू. स्वामिश्री चिदानंदमुनिजी, प. पू. जिनचंद्रविजयजी इत्यादि भारत के कोने-कोने से आए परम आदरणीय महानुभावों की उपस्थिति ने तथा देश-विदेश के समग्र गुणातीत समाज के हरिभक्तों ने इस महोत्सव की शोभा को और बढ़ाया।

आत्मीय महोत्सव निमित्त हरिधाम-सोखड़ा में तारीख 16.12.94 के संतों, युवकों, बहनों, हरिभक्तों के अत्यधिक परिश्रम से 'युवा जागृति प्रदर्शन' का आयोजन किया गया था। प. पू. स्वामिजी का बाल्याकाल से अब तक जीवन, गुणातीत समाज के ऐतिहासिक प्रसंग और मुक्ति के आधार पर चित्रों द्वारा युवकों को प्रेरित किया गया था। प्रदर्शनी में प्रकाश व ध्वनी का भी कायक्रम रखा हुआ था जिसमें प. पू. स्वामिजी के पूरे जीवन पर आधारित चित्रों व चलचित्रों द्वारा उनका माहात्म्य बताया गया था।

सबसे अधिक आनंद की बात कि प. पू. स्वामिजी ने संतों, युवकों, बहनों, हरिभक्तों द्वारा किए दिन-रात के अविरत परिश्रम व आपस में आत्मीयता से उठाव लेने पर दिल की अत्यधिक प्रसन्नता बताई..... जिससे सेवकों के आनंद का पार नहीं रहा ! सभी हरिभक्तों ने दिल में आत्मीय महोत्सव की चिरंजीव स्मृति लेकर आनंद से विदाई ली।

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

400. जिसका संग हो उसके गुण आते हैं। सो भगवान तथा साधु का संग करना और दूसरे का तो जैसे भीमसेन को धृतराष्ट्र मिला था वैसे करना। स्वाद वगैरे में **अति** हो उसमें दुःख है। सो अति नहीं होने देना- अति सर्वत्र वर्जयेत्।

प्र- 5,178

401. कृपानंदस्वामी वगैरे बड़े साधु जितना हम में बल नहीं। सो, बड़े साधु से बहस न करके ग्यारह नियम पालना। तो उन जैसे बलवान हो जाएगें। यह संग ऐसा है कि इस में उपासना, धर्म वगैरे सभी है, कुछ बाकी नहीं। उस पर गढ़डा के मध्य प्रकरण का त्रेसठवां-बल पाने का वचनामृत पढ़वाया।

प्र-5,179

402. मन से साधन करते हैं तब तक मन का राज्य टलता नहीं। इसलिए भगवान व साधु कहें वैसा करना। ग्यारह नियम में रहना। इससे जड़ नष्ट होती है जिससे कि फल-फूल नहीं आते। बल से नहीं जीत पाते पर करामात से जीत पायेंगे। इस बात पर सारंगपुर का सातवां वचनामृत नैमिशारण्य का पढ़वाया।

प्र-5,180

403. इस साधु के संग से सभी बड़प्पन को पाये हैं और अक्षर मुक्तों भी उपासना से बड़े हुए हैं। निरंतर बैठकर भजन करें- ऐसा कोई हो तो उसका व्यवहार चलाना मेरी जिम्मेदारी है।

प्र-5,181

404. भगवान तथा साधु के शब्द से देह बंधता है और उससे भगवान भज सकते हैं। स्वयं की समझ छोड़कर भगवान तथा साधु की समझ से चलना।

प्र-5,182

405. स्वरूपनिष्ठा, ज्ञाननिष्ठा, आत्मनिष्ठा और धर्मनिष्ठा- इन चार प्रकार की निष्ठा में यदि एक स्वरूपनिष्ठा दृढ़ हो, तो बाकी तीन भी उसके अन्तर्गत आ जाती है।

प्र-5,183

406. मुक्त, मुमुक्ष, विषयी और पामर- ये चार प्रकार के भक्त हैं। उसमें जो पामर हैं वह कोई पदार्थ के लिए व करिश्मे के लिए भगवान को भजता है। विषयी है वह इस लोक के विषय-सुख का तो त्याग करे, परन्तु स्वर्ग आदि के उत्तम सुख की इच्छा करता है और जो मुमुक्ष, हैं वह स्वयं की आत्मा के कल्याण के लिए भगवान भजता है। मुक्त है वह भगवान की मूर्ति की ही इच्छा रखता है। इन चारों में भी उत्तम, मध्यम व कनिष्ठ यूं भेद हैं।

प्र-5,185

407. अजामेल को संत का संग हुआ और उसे जब नियम रखने के लिए कहा तब बोला कि- मेरे से पलेगा नहीं। तब भी संत ने अनुग्रह करके उसके लड़के का नाम नारायण रखवा कर भी कल्याण करा। इसलिए भगवान मिले हैं सो कुछ करना बाकी नहीं रहा।

प्र-5,186

408. ये सारी बातें सुनकर इतना ही समझना है कि मैं तो आत्मा हूँ, अक्षर हूँ, ब्रह्मरूप हूँ, सुखानंद हूँ और देह, इंद्रियों, अंतःकरण, परिवार- ये सभी मेरे नहीं हैं और मैं उनका नहीं हूँ। मैं तो भगवान का हूँ व भगवान मेरे हैं। कई प्रकार की बातें सुन-सुनकर यही समझना है और भगवान जब पृथ्वी पर पधारते हैं तब राजसी,तामसी, अधम- उन सभी का उद्धार कर देते हैं। सो ऐसा जोग व संग फिर मिलने वाला नहीं है।

प्र-5,190

409. प्रियव्रत को कई संतान हुई व ग्यारह अर्बुद तक राज्य करा, फिर भी आत्माराम व महा भागवत संत कहलाये गृहस्थाश्रम में रहकर कथा में से विराम को वह नहीं पाये तथा साधु में से लगाव टला नहीं। सो बड़े कहलाये। महाराज प्रहलादजी व प्रियव्रत की खूब प्रशंसा करते थे।

प्र-5,191

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	27.1.95	शुक्रवार	एकादशी, व्रत गुरुहरि योगीजी महाराज का स्वाधामगमन दिन
2. दि.	3.2.95	शुक्रवार	ब्र.स्व. पू. पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन व अशोक विहार स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव
3. दि.	4.2.95	शनिवार	वसंत पंचमी, शिक्षापत्री जयंती, गुरुवर्य शास्त्री महाराज का प्रागट्यदिन
4. दि.	9.2.95	गुरुवार	शुक्ला नवमी
5. दि.	11.2.95	शनिवार	एकादशी, व्रत
6. दि.	25.2.95	शनिवार	एकादशी, व्रत
7. दि.	27.2.95	सोमवार	महाशिवरात्री

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY
A-103, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110053 Tel.: 2262473